Teacher's Manual

Carvaan

हिंदी

Preparatory Stage

Class 3

MASTERMIND

Carvaan

हिंदी भाग-3

अध्याय 1
अच्छाई की जीत

पाठ-बोध

उ०2. (क) शेरसिंह के गुस्सैल व्यवहार के कारण।
(ख) शेरसिंह ने।
(ग) शहर।
(घ) शेरसिंह की।
(ङ) शेरसिंह को।

उ०3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii)
(घ) (ii) (ङ) (ii)

उ०4. (क) झगड़ालू (ख) लाल (ग) शेरसिंह
(घ) पछताया (ङ) विजय

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✓ (ङ) ✗

उ०6. (क) कृपाल सिंह उदार व्यक्ति था।
(ख) शेरसिंह झगड़ालू व्यक्ति था इसलिए गाँववालों ने कृपाल सिंह को शेरसिंह से दूर रहने की सलाह दी।
(ग) कृपाल सिंह ने कहा– शेरसिंह मुझसे झगड़ा करेगा तो मैं उसे सही पाठ पढ़ा दूँगा।
(घ) शेरसिंह ने तरबूज को यह कहकर लौटा दिया कि वह भिखारी नहीं है।
(ङ) कृपाल सिंह ने शेरसिंह की मुसीबत के समय में मदद की। इस प्रकार उसका घमंड चूर हो गया।

व्याकरण-बोध

उ०1. रात – निशा दिन – दिवस
मित्र – दोस्त किसान – कृषक
क्रोध – गुस्सा सहायता – मदद

उ०2. खेत – खेतों बैल – बैलों
गाड़ी – गाड़ियाँ पाठ – पाठों

उ०3. एक – अनेक मीठा – खट्टा
हँसकर – रोकर रात – दिन
मित्र – दुश्मन बलवान – निर्बल
शहर – गाँव बुराई – अच्छाई

उ०4. घमंड़ी – शेर सिंह बहुत घमंडी व्यक्ति था।
सहायता – सहायता करना एक अच्छा गुण है।
खेत – किसान खेत जोतता है।
बरसात – बरसात के मौसम में बहुत से कीट आते हैं।

अध्याय 2
हिमालय

कविता-बोध

उ०2. (क) हिमाचल प्रदेश, देहरादून आदि।
(ख) उत्तर की ओर।

उ०3. (क) (i) (ख) (i) (ग) (i)

उ०4. (क) खड़ा हिमालय बता रहा है,
डरो न आँधी-पानी में।
खड़े रहो तुम अपने पथ पर,
सब कठिनाई तूफानी में।

(ख) अचल रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में।
मिली सफलता जग में उसको
जीने में मर जाने में।

उ०5. कवि कहते हैं कि हम कठिनाइयों का सामना अडिग रहकर करें तो सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। हम अपनी मेहनत के द्वारा नभ के तारे तोड़ने, जैसे असम्भव कार्य को भी सम्भव बना सकते हैं।

उ०6. (क) हिमालय से हमें अविचल होकर निज पथ पर खड़े रहना सीखना चाहिये।

(ख) मुसीबत में भी अपने पथ पर अचल रहना चाहिए ताकि हम अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकें।

(ग) निडर, अविचल, दृढ़ विश्वासी व्यक्ति को सफलता मिलती है।

व्याकरण-बोध

उ०1.

नभ	–	गगन	आकाश
रास्ता	–	रथ	मार्ग
पानी	–	जल	नीर
जग	–	संसार	जगत

उ०2. पथ – रथ आने – जाने
प्यारे – न्यारे पानी – लानी
उ०3. आंधी – आँधी तुफान – तूफान
पृण – प्रण मुसिबत – मुसीबत
उ०4. संकट – विपत्ति सफलता – कामयाबी
प्रण – प्रतिज्ञा अचल – अडिग
नभ – आकाश जग – संसार

उ०5. पानी – पानी अमूल्य है।
प्रण – एक बार यदि प्रण लो तो उसे तोड़ना नहीं चाहिए।
तारे – तारे रात में दिखाई देते हैं।
मुसीबत – मुसीबत में धैर्य से काम लेना चाहिए।
पथ – सही पथ हमें हमारी मंजिल तक ले जाता है।
सफलता – सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है।

अध्याय 3
आलस बुरी चीज

पाठ-बोध

उ०2. (क) टी०वी० देखा (ख) गृहकार्य करने के लिए
(ग) गृहकार्य न करना (घ) समय पर

उ०3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (i)
(घ) (iii)

उ०4. (क) हाथ-मुँह (ख) गृह-कार्य (ग) शाम
(घ) बदला-बदला (ङ) कहानी

उ०5. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓
(घ) ✓ (ङ) ✓

उ०6. (क) विभू की माँ ने उसे दोबारा कुछ नहीं कहा ताकि विभु का मुँह न फूल जाये।
(ख) पार्क में विभु का याद आया कि उसने अपना गृहकार्य नहीं किया है।
(ग) श्रेया ने विभु को बताया कि वह तो विद्यालय से आकर खाना खाने के बाद सबसे पहले अपना गृहकार्य करती है।
(घ) विभु अगले दिन सब कार्य समय पर कर रहा था।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) देखी (ख) रोने लगा (ग) झूलने लगा
(घ) चला गया

उ०2.

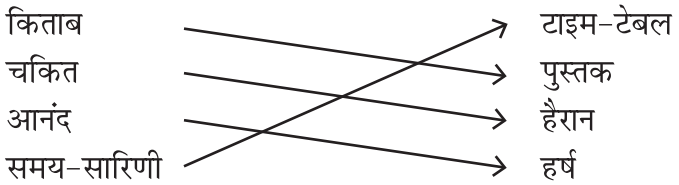

उ०3. (क) ? (ख) । (ग) । (घ) ?

उ०4.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
स्वर्ण पार्क	पार्क
विभु	ऑफिस
श्रेया	स्कूल
कार्टून	पक्षी

उ०5. सोना – जागना दिन – रात
अच्छा – बुरा जल्दी – देर
उदास – खुश ठीक – गलत
अधिक – कम बाद – पहले
खाना – पीना आज – कल

उ०6. काटूर्न – कार्टून ग्रहकार्य – गृहकार्य
ऑफिश – ऑफिस वापीस – वापिस
हेरानी – हैरानी कहानि – कहानी

उ०7. नई – मुझे एक नई किताब मिली है।
गृहकार्य – गृहकार्य समय पर करना चाहिए।
तैयार – विद्यालय अच्छे से तैयार होकर जाना चाहिए।
चिंता – चिंता करना चिता के समान होता है।
समय – समय बहुत उपयोगी होता है।

अध्याय 4
किसान का अनमोल खजाना

पाठ-बोध

उ०2. (क) भोलाराम से।

(ख) भोला ने लाल कपड़े से ढका तरबूज सेठ को लेने से मना कर दिया क्योंकि वह किसी और को भेंट करने के लिये था।

(ग) सेठ ने भेंट स्वीकार नहीं की क्योंकि भोलाराम ने उन्हें खेत में तरबूज नहीं दिया था।

(घ) हल से ही किसान अन्न उगाता है।

उ०3. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (i)
(घ) (ii) (ङ) (ii)

उ०4. (क) प्यास (ख) तरबूज (ग) बात
(घ) हीरे-मोतियों (ङ) तुच्छ भेंट

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✓ (ङ) ✗ (च) ✓

उ०6. (क) भोलाराम।

(ख) सेठ जी रास्ता भूल गये थे।

(ग) भोला ने हाथ जोड़कर सेठ जी से कहा कि आप खेत में से कोई सा भी तरबूज खा सकते हैं परन्तु लाल कपड़े से ढ़का नहीं।

(घ) सेठ जी तरबूज खाकर अपने घर नहीं आए, क्योंकि उन्हें लाल कपड़े से ढ़का तरबूज ही खाना था।

(ङ) भोला तरबूज लेकर सेठ हीरामल के पास पहुँचा।

(च) सेठ के खजाने को सुरक्षा की आवश्यकता पड़ती थी, परन्तु भोला के खजाने को नहीं।

व्याकरण-बोध

उ०1. रास्ता – रास्ते झोंपड़ी – झोंपड़ियाँ
मीठे – मीठा कपड़े – कपड़ा

उ०2. व्यापार करने वाला – व्यापारी
खेती करने वाला – खेतिहर
सोने का सामान बनाने वाला – सुनार

उ०3. (क) जा रहा था। (ख) मिलना चाहिए।
(ग) पहचान लिया।

उ०4. व्यापार – व्यापार में लाभ-हानि लगा रहता है।
झोंपड़ी – खेत के पास ही किसान की झोंपड़ी थी।
बटोही – बटोही ने किसान से पानी माँगा।
खजाना – व्यापारी की तिजोरी में बहुत सारा खजाना था।

अध्याय 5
समझदार कुंभोदर

पाठ-बोध

उ०2. (क) व्यापारी के पास कुंभोदर नाम का एक विशाल हाथी था और वह जंगल से लट्ठे ढोने का काम करता था।

(ख) महावत ने हाथी को अंकुश इसलिये चुभोया ताकि हाथी उसकी बात मान ले।

(ग) हाथी ने खंभे को दूर फेंका, क्योंकि गड्ढे में एक बिल्ली छुपी हुई थी।

(घ) हाथी ने बिल्ली को बचाया।

उ०3. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०4. (क) विशाल (ख) भारी, लंबा (ग) दर्द

(घ) बिल्ली (ङ) चहेता

उ०5. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗

(घ) ✗ (ङ) ✓

उ०6. (क) कुंभोदर हाथी जंगल से बड़े-बड़े लट्ठे ढोने, जुलूस में चलने, दूल्हे को सवारी कराने का काम करता था।

(ख) गाँव वाले कुंभोदर को पेड़ के तने को उठाने के लिए लेकर आये थे।

(ग) कुंभोदर पीछे हटा क्योंकि गड्ढे में बिल्ली छिपी हुई बैठी थी।

(घ) कुंभोदर ने खंभे को देर तक गड्ढे में पकड़े रखा ताकि लोग गड्ढे में मिट्टी डालकर गड्ढा भर दें।

(ङ) कुंभोदर ने बिल्ली की जान बचाई इसलिये लोगों ने कुंभोदर की दयालुता से खुश होकर प्यार से उसकी पीठ थपथपाई।

(च) जब बच्चों को कुंभोदर की मुफ्त सवारी मिलती तो बच्चे बहुत खुश होते थे।

व्याकरण-बोध

उ०1. चिह्न – चिह्न बुद्धि – बुद्धि
खट्टा – खट्टा भद्दा – भद्दा
लट्ठा – लट्ठा हड्डी – हड्डी
चिट्ठी – चिट्ठी मट्ठा – मट्ठा
विद्या – विद्या शुद्धि – शुद्धि

उ०2. अच्छा – बुरा सुख – दुख
भारी – हल्का स्वामी – नौकर
दूर – पास लंबा – बौना
छोटी – बड़ी जोर से – धीरे से

उ०3. जानकारी, जिसका, जीत, खुश, जूता, जेब, जैसा, जोड़ना, जौ

उ०4. विशाल हाथी – विशाल भारी खंभा – भारी
गहरा गड्ढा – गहरा लंबी सूँड – लंबी
छोटी बिल्ली – छोटी चहेता हाथी – चहेता

उ०5. हाथी – गजराज मतंग जंगल – कानन वन
ध्वज – पताका झंडा जमीन – धरती धरा
पेड़ – वृक्ष तरू

उ०6. विशाल – हाथी एक विशाल जानवर है।
भारी – भारी सामान उठाने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है।
जगह – बिल्ली को देखकर कुंभोदर अपनी जगह से नहीं हिला।
जमीन – जमीन के अन्दर बिल्ली छिपी थी।
मिट्टी – मिट्टी खोदकर डंडा गाड़ा गया।

•

ऊँ	ट	चीं	ती	मो	र
लौ		टी	त	र	मु
म	क	ड़ी	र	नी	र
ड़ी	छु	हा	थी		वी
	आ		चि	ड़ि	याँ
म	ग	र	म	च	छ
ची	ल		ट	तो	ता
ता	म	छ	ली	मै	ना

उड़ने वाले जीव	जमीन पर चलने वाले जीव	तैरने वाले जीव
चील	चीता	मछली
मैना, तोता	चींटी	मगरमच्छ
तीतर	ऊँट	कछुआ
चिड़ियाँ	लोमड़ी	
मोर, मोरनी	हाथी	

अध्याय 6
कौन सिखाता?

पाठ-बोध

उ०2. (क) चीं-चीं (ख) तिनके का (ग) निराला
(घ) प्रकृति के।

उ०3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iii)

उ०4. (क) कौन सिखाता फुर्र से उड़ना, दाने चुग-चुग खाना?
कौन सिखाता तिनके ला-ला कर घोंसले बनाना?
(ख) हम सब उसके अंश कि जैसे तरु-पशु-पक्षी सारे
हम सब उसके वंशज जैसे सूरज-चाँद-सितारे।

उ०5.

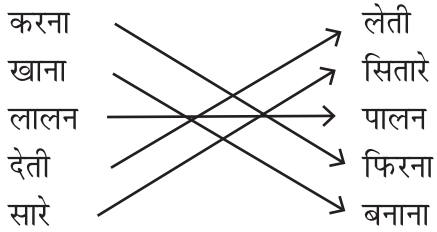

उ०6. (क) चुग-चुगकर दाना चिड़िया खाती है।
(ख) हमें सबसे ज्यादा प्यार प्रकृति करती है।
(ग) कुदरत से हमें सभी कुछ प्राप्त होता है।
(घ) अंश का अर्थ है– हिस्सा और वंशज का अर्थ है– वंश से उत्पन्न।

व्याकरण-बोध

उ०1. चीं-चीं करती – चिड़ियाँ
चलना-फिरना – फुदक-फुदक कर
चुग-चुग खातीं – दाने
खेल है यह – कुदरत का
करतीं बच्चों का – लालन-पालन

उ०2. फुदक-फुदक कर – चुग-चुग कर कूद-कूद कर

उ०3.

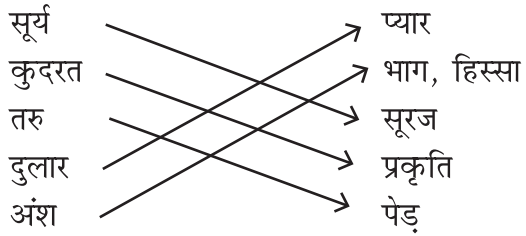

उ०4. चिडिया – चिड़िया
घौसला – घोंसला
तरू – तरु
कोन – कौन
चौकशी – चौकसी
पक्छी – पक्षी

उ०5. चलना-फिरना – चलना-फिरना सेहत के लिए अच्छा है।
आना-जाना – हमारे घर मेहमानों का आना-जाना लगा रहता है।
खाना-पीना – सही समय पर खाना-पीना अति आवश्यक है।
रोना-हँसना – दोस्त साथ-साथ रोते-हँसते हैं।
पढ़ना-लिखना – अच्छे जीवन के लिए पढ़ना-लिखना अनिवार्य है।
लालन-पालन – माता-पिता बच्चों का लालन-पालन करते हैं।
इधर-उधर – काम के समय इधर-उधर ध्यान नहीं भटकाना चाहिए।

अध्याय 7
नहीं व्यर्थ बहाओ पानी

कविता-बोध

उ०2. (क) बिना जल के जीवन धरा से खत्म हो जायेगा।
(ख) रेगिस्तान सूखी भूमि है। उपजाऊ भूमि जल प्राप्त न होने पर रेगिस्तान के समान बन जाती है।
(ग) बादल
(घ) पेड़ लगाने चाहिए जल को बचाना चाहिए।

उ०3. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)
(घ) (i)

उ०4. हरी-भरी जहाँ होती धरती
वहीं आते बादल उपकारी,
खूब गरजते खूब चमकते
और करते चर्चा भारी।

उ०5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓
(घ) ✓ (ङ) ✓

उ०6. (क) बिना वर्षा के खेत वीरान हो जायेंगे।
(ख) यदि पानी समाप्त हो गया तो जीवन भी समाप्त हो जायेगा।
(ग) बादलों को उपकारी कहा गया है, क्योंकि वे वर्षा के द्वारा धरती पर जल बरसाते हैं।
(घ) बादल गरज-चमक कर वर्षा करता है।
(ङ) हमें पेड़ों का रक्षण करना चाहिए, क्योंकि इन्हीं के कारण हमें जल प्रदान होता है। हमें जल का रक्षण करना चाहिए क्योंकि जल है तो जीवन है।

व्याकरण-बोध

उ०1.

धरा	–	पृथ्वी	व्यर्थ	–	बेकार
बादल	–	वारिद	जग	–	संसार
वृक्ष	–	पेड़	पानी	–	जल

उ०2. (क) सदा (ख) बचाना (ग) हरा-भरा
(घ) उपजाऊ (ङ) अनमोल

उ०3.

नानी	–	पानी	सरपट	–	करवट
उपकारी	–	अपकारी	लगाओ	–	भगाओ
धरा	–	भरा	गरजते	–	बरसते
बहाओ	–	बचाओ	जग	–	मग

उ०4. अनमोल – समय अनमोल है।
धरा – धरा हमारी माँ समान है।
वीरान – वीरान स्थान पर जाना अनुचित होता है।
रत्न – माता-पिता के लिए उनके बच्चे अनमोल रत्न के समान होते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

उ० अबुल फजल राजा टोडरमल हकीम हुक्काराम
फ़ैज़ी राजा मानसिंह मुल्ला-दो-पिअज़ा
तानसेन अब्दुल रहीम खान-ए-खाना

अध्याय 8
साहसी बालक

पाठ-बोध

उ०2. (क) कुल्ले जिले के। (ख) नहीं
(ग) बर्फ की आँधियाँ, तूफानी थपेड़ों जैसी।
(घ) वीरता का राष्ट्रीय पुरस्कार।

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)
(घ) (i)

उ०4. (क) खतरनाक (ख) प्रिय खेल (ग) धैर्य
(घ) फूलों (ङ) बर्फीली आँधियाँ

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✗ (ङ) ✓

उ०6. (क) रोहतांग दर्रे की ऊँचाई तेरह हजार फुट थी।
(ख) एक दिन संगीता ने रूपेंद्र से कहा कि ''भैया, क्या हम रोहतांग दर्रा पार कर सकते हैं।
(ग) रोहतांग दर्रे के बीच में सब और बर्फ-ही-बर्फ, बीच-बीच में तेज हवा और आँधी चलती तो दोनों को लगता कि वे तिनके की तरह इस आँधी में उड़ जाएँगे।
(घ) संगीता और रूपेंद्र ने सब लोगों से हँसकर कहा कि सभी बच्चों को बहादुर बनना चाहिए।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) बर्फीली (ख) अनोखी (ग) छोटे
(घ) ठंडी (ङ) मीठे

उ०2. (क) बड़े-बड़े साहसी और सूरमा भी उधर जाने से घबराते थे।
(ख) रूपेन्द्र के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे।
(ग) उन्हें वीरता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

उ०3. (क) वह (ख) उनकी (ग) उसको
(घ) हमें

उ०4. (क) का (ख) की (ग) के

उ०5. साहसी – हिम्मती दर्रा – पहाड़ के अन्दर से रास्ता
भीषण – अत्यधिक भौंचक्के – आश्चर्य
वर्ष – साल प्रिय – प्यारा
बगैर – बिना नन्हें – छोटे

उ०6. बर्फीली – दर्रा बर्फीली हवाओं से घिरा था।
खतरनाक – दर्रा खतरनाक बर्फ से भरा था।
प्रतिदिन – हमें प्रतिदिन अपने बड़ों को प्रणाम करना चाहिए।
आश्चर्य – बच्चों को दर्रा पार करके आता देख, लोग आश्चर्य से भर गए।
प्रकृति – प्रकृति सबका लालन-पालन करती है।
प्रिय – अपने माता-पिता सबको प्रिय होते हैं।

अध्याय 9
एक तिनका

कविता-बोध

उ०2. (क) इंसान (ख) बड़ा होने का
(ग) जब वह सब कुछ जानने लगता है।

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०4. घमंडों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन था जब मुँडेर पर खड़ा।
अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।

उ०5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗
(ङ) ✓

उ०6. (क) घमंड से भरा हुआ / घमंड में ऐंठा हुआ।
(ख) लोग कपड़े की छोटी पोटली बना कर देने लगे।
(ग) एक तिनका ही घमंड तोड़ने के लिए काफी है।

उ०7. (क) मुँडेर पर घमंड से भरा हुआ आदमी खड़ा था ।
(ख) उसकी आँख में आकर तिनका पड़ा।
(ग) ऐंठ दबे पाँव भागी क्योंकि वह एक तिनके का सामना भी नहीं कर पायी।
(घ) कवि ने इस कविता के माध्यम से संदेश दिया है कि हमें घमंड नहीं करना चाहिए।

व्याकरण-बोध

उ०1. अनुस्वार (ं) – पतंग रंग संग
अनुनासिक (ँ) – आँख गाँठ मूँठ

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iv)
(घ) (i)

उ०3. बे+सहारा – बेसहारा सहारे के बिना

बे+आराम – बेआराम आराम रहित

बे+अक्ल – बेअक्ल बुद्धिहीन

बे+शर्म – बेशर्म लज्जाहीन

उ०4.

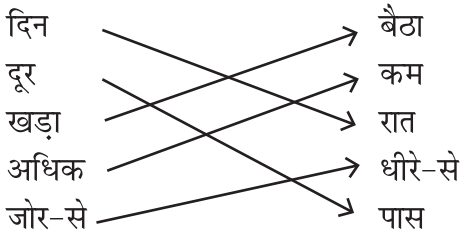

उ०5. आँख – नयन पाँव – पैर

दिन – दिवस कपड़ा – चीर

उ०6. घमंड – हमें घमंड नहीं करना चाहिए।

तिनका – डूबते को तिनके का सहारा भी काफी होता है।

लाल – लाल गुलाब सभी को प्रिय लगता है।

कपड़े – सुन्दर कपड़े हमें और आकर्षक बना देते हैं।

अचानक – कल अचानक मेरी तबियत खराब हो गई।

बहुत – मेरे बहुत सारे मित्र हैं।

अध्याय 10
विचित्र प्राणी

कविता-बोध

उ०2. (क) रात का (ख) सुबह का (ग) गाड़ी
(घ) बरतन, बीज, गाड़ी

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०4. (क) टोडर (ख) प्राणी (ग) थैला
(घ) हरा-भरा (ङ) बीज

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✗ (ङ) ✓

उ०6. (क) अंतरिक्षयान धरती पर आकर रूका तथा उसमें से एक आदमी निकला।
(ख) टोडर को नयी-नयी चीजें इकट्ठा करने का शौक था।
(ग) धोबी ने टोडर को एक बरतन दिया।
(घ) किसान खेत में बीज बो रहा था।
(ङ) बढ़ई ने टोडर को बताया कि कोई भी कार्य कठिन नहीं होता।
(च) टोडर को अपने लोगों की याद आने लगी तो वह वापिस अपनी बाहरी दुनिया में चला गया।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) नदी के किनारे अनेक मछुआरे थे।
(ख) धोबी नदी में कपड़े धो रहे थे।
(ग) बढ़ई मेज-कुर्सियाँ बना रहे थे।

उ०2. माली – मालिन चिड़ा – चिड़िया
पंडित – पंडिताइन चूहा – चुहिया

उ०3. (क) फूल (ख) बिल्ली (ग) घोड़ा

उ०4. जो कपड़े धोता है – धोबी
जो मकान बनाता है – मिस्त्री
जो मछलियाँ पकड़ता है – मछुआरा
जो अनाज उगाता है – किसान
जो लकड़ी का काम करता है – बढ़ई

उ०5. उजाला – अँधेरा गाँव – शहर
धरती – आकाश जल्दी – देर
दूर – पास अच्छा – बुरा

उ०6. आगे-पीछे – आगे और पीछे हँसना-गाना – हँसना और गाना
दिन-रात – दिन और रात मेज-कुर्सी – मेज और कुर्सी
गोरा-काला – गोरा और काला

उ०7. प्राणि – प्राणी शोकीन – शौकीन
द्रश्य – दृश्य वहां – वहाँ

उ०8. हवा – हवा में बहुत सी गैसें पायी जाती हैं।
बाहरी – बाहरी वस्तुएँ माता-पिता की आज्ञा के बिना किसी से नहीं लेनी चाहिए।
उजाला – नए बल्ब ने घर में उजाला कर दिया।
अच्छा – हमें सबके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।
कठिन – कठिन कार्यों को करने से डरना नहीं चाहिए।

अध्याय 11
अनेकता में एकता

कविता-बोध

उ०2. (क) देश के सामने (ख) विभिन्न भाषाएँ
(ग) नदियों में कल-कल बहते पानी पर सबका एकसमान अधिकार है।
(घ) हाँ

उ०3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i)
(घ) (iii)

उ०4.

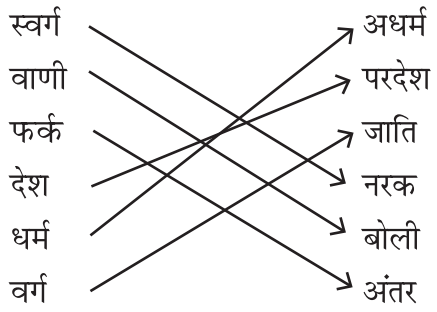

उ०5. मातृभूमि भारत से बढ़कर कोई स्वर्ग नहीं है,
देश-धर्म के आगे होता, कोई वर्ग नहीं है।
अलग-अलग भाषाएँ लेकिन वाणी सबकी एक है,
नदियों की कल-कल में बहता पानी सबका एक है।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई में कुछ फर्क नहीं है,
देश-धर्म के आगे होता, कोई वर्ग नहीं है।

उ०6. (क) देश धर्म से ऊपर कोई जाति, कोई वर्ग, कोई धर्म नहीं होता है।
(ख) नदियों की कल-कल की ध्वनि में बहते पानी पर सबका एक समान अधिकार है।

उ०7. (क) कविता में भारत-भूमि को स्वर्ग से भी अच्छा बताया है क्योंकि यहाँ सभी धर्म के लोग मिल-जुलकर रहते हैं।
(ख) हमारे देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं।

(ग) भारत देश में जाति-धर्म में फर्क नहीं है, क्योंकि सब मिल-जुलकर प्रेम से रहते हैं।

(घ) कवि के अनुसार मातृभूमि से बढ़कर कुछ नहीं है।

(ङ) हाँ, देश सभी धर्म से ऊपर होता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. सही, ईसाई, भाँति, नरम

उ०2. पानी – नानी, रानी, लानी
नाम – काम, दाम, राम
काल – लाल, बाल, हाल

उ०3.

भाषा	– भाषाएँ	वाणी	– वाणियाँ
वर्ग	– वर्गों	नदी	– नदियाँ
धर्म	– धर्मों	देश	– देशों
हिंदू	– हिंदुओं	जाति	– जातियाँ
बात	– बातों	कविता	– कविताएँ
सबका	– सबको	गाथा	– गाथाएँ

अध्याय 12
गुलाबी नगरी जयपुर

कविता-बोध

उ०2. (क) यह पत्र सौम्या ने रिया को लिखा।

(ख) जयपुर नगर का नाम 'जयपुर', यहाँ के राजा जयसिंह के नाम पर पड़ा।

(ग) जयपुर को गुलाबी नगरी कहते हैं क्योंकि जयपुर की बाहरी दीवार और अधिकांश इमारतें गुलाबी रंग की दिखाई देती हैं।

(घ) आमेर के किले के विषय में बताया गया है।

उ०3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०4. (क) जयपुर (ख) ऊँची (ग) गुलाबी

(घ) संग्रहालय (ङ) उपलब्ध

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓

(घ) ✓

उ०6. (क) जयपुर से।

(ख) जयपुर संसार के सुंदर नगरों में से एक है। इसे राजा जयसिंह ने बसाया था। उसी के नाम पर इस नगर का नाम जयपुर पड़ा। यह राजस्थान की राजधानी है। इस नगर के तीन ओर ऊँची पहाड़ियाँ हैं। नगर के चारों ओर ऊँची दीवार है। इस दीवार में अठ्ठारह बड़े-बड़े दरवाजे हैं। इन्हीं दरवाजों से लोग नगर में आते-जाते हैं। यहाँ की सड़कें बहुत चौड़ी हैं।

(ग) राजमहल बहुत विशाल है और इसकी सुंदरता का वर्णन तो मैं कर ही नहीं पाऊँगी। महल के एक हिस्से में संग्रहालय है। इसमें कई पीढ़ियों के राजाओं के वस्त्र, आभूषण, हथियार आदि रखे हैं। प्राचीन मूल्यवान पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियाँ भी यहाँ रखी हैं।

(घ) बाजारों की शोभा तो न्यारी है। सभी तरह के सामान यहाँ उपलब्ध हैं। चुँदरी-छपाई के शोख रंग के वस्त्र तथा हस्त निर्मित वस्तुएँ

यहाँ के बाजारों की विशेषता है। जौहरी बाजार सोने-चाँदी के जेवर और रंग-बिरंगे पत्थरों के जड़ाऊ आभूषणों से भरा पड़ा है।

व्याकरण-बोध

उ०1. दरवाजे – दरवाजा
चूड़ियाँ – चूड़ी
पीढ़ियाँ – पीढ़ी
गाड़ियाँ – गाड़ी
लड़कियाँ – लड़की
बातें – बात
कथाएँ – कथा
पहाड़ियाँ – पहाड़ी
सड़कें – सड़क
इमारतें – इमारत
गुड़ियाँ – गुड़िया
लड़के – लड़का
आँखें – आँख
पुस्तकें – पुस्तक

उ०2. (क) बनाया (ख) बसाया (ग) देखने गए
(घ) पाया (ङ) खरीदी

उ०3. ऊँची – दीवार
सुन्दर – वस्त्र
महँगे – आभूषण
बड़ा – महल
पुरानी – पुस्तक
सुन्दर – नगर

उ०4. ऊँचा – ऊँची
राजा – रानी
पहाड़ – पहाड़ी
चाचा – चाची

उ०5. विशाल – बड़ा
उपलब्ध – मौजूद
जिज्ञासा – उत्सुकता
आभूषण – गहने
न्यारी – अच्छी
हस्तलिखित – हाथ से लिखे हुए

उ०6. (क) है (ख) हैं (ग) है
(घ) है (ङ) हैं

उ०7. कार्यक्रम – हम कल एक कार्यक्रम में गए।
विशाल – हाथी विशाल जानवर है।
हथियार – युद्ध में बड़े-बड़े हथियार प्रयोग होते हैं।
प्रसिद्ध – हवा महल बहुत प्रसिद्ध है।
शोभा – हवा महल जयपुर की शोभा है।
आनन्द – घूमने में आनन्द बहुत आता है।

अध्याय 13
चाह बनी मुसीबत

पाठ-बोध

उ०2. (क) हैडमास्टर जी ने

(ख) कमल जानवरों को देखकर झुँझलाया क्योंकि वे सब कमजोर से थे।

(ग) चीता गुब्बारे पर कमल को खाने के लिए चढ़ा।

(घ) यदि चीते के स्थान पर कमल गुब्बारे से गिर जाता तो वह मर जाता।

उ०3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)
(घ) (iii)

उ०4. (क) तमाशा (ख) आकर्षक (ग) सर्कस
(घ) इतवार (ङ) जानदार (च) गुब्बारे

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✗ (ङ) ✓ (च) ✓

उ०6. (क) शहर में सर्कस पार्टी हुई थी।

(ख) कमल लड़कों को सर्कस देखने जाने की सलाह दे रहा था।

(ग) कमल ने जानवरों को देखने के लिए एक आने का टिकट खरीदा।

(घ) कमल को सर्कस में आने का अफसोस हुआ।

(ङ) कमल गुब्बारे पर अपनी जान बचाने के लिए चढ़ा।

(च) गुब्बारे पर एक साथ चढ़े होने के बाद भी चीता कमल को नहीं पकड़ता क्योंकि उसे अपनी जान खतरे में नजर आ रही थी।

व्याकरण-बोध

उ०1. वह उसने मैं
उसकी उसे तुम

उ०2. जानवर – जानवरों किताब – किताबों
खेल – खेलों रात – रातें
तमाशा – तमाशों रस्सी – रस्सियाँ
गुब्बारा – गुब्बारों खिलौना – खिलौनों

उ०3. आदमी – औरत आगे – पीछे
साहसी – डरपोक ऊपर – नीचे
अच्छा – बुरा खरीदा – बेचा
पहला – आखिरी भूख – भरपेट

उ०4. सलाह – बिना माँगे किसी को भी सलाह नहीं देनी चाहिए।
तस्वीर – मेरा मित्र कल मेरी तस्वीर बनायेगा।
जिद्दी – जिद्दी बच्चे कभी किसी की नहीं सुनते।
गुब्बारा – मुझे लाल रंग का गुब्बारा पसंद है।
रात – रात को इधर-उधर नहीं घूमना चाहिए।
आनंद – हमें आनंद से जीवनयापन करना चाहिए।

क्रियाकलाप

उ०
- विश्व वन्यजीव कोष (WWF)
- नहीं, क्योंकि जानवर आजाद रहना पसंद करते हैं, उन्हें कैद में रखकर उनसे जबरन कार्य लेना, उनका शोषण करने के समान है।